

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ २ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ३ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ४ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ५ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ६ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ७ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ८ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ९ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १० ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ११ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १२ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १३ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १४ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १५ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १६ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १७ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १८ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १९ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ २० ॥

वपदपप्री॥ ॥ नागात्रसूत्रलेखमरि तावप २ माधवकृष्णमि
 लगुवात्र॥ ॥ यातागवत्रयजनसंलग्नप्रस्थवित्रै २ सैदत्रानंद
 प्रमुखैर्मदितैः॥ ॥

नाग ॥ गाल ॥ स्वर्हमित्रिनाज नलसत्राङ्ग २ हानिध्वय
 सहविलसितं॥ ॥ यजामि २ यागमन्त्रतावचनहकमला॥ क्र ॥
 पुरुषकाननं दिव्यनिलाग्रनं २ विष्णुपविघ्नमकनद्ययधन
 ॥ ॥ जटाशठमकुटपंचजिननाडितं २ विरुतिरुषितधवलव
 यनी॥ ॥ विष्णुवृत्तकनाथमने २ सैवतं २ प्रहमासिसदात

सुप्रसिद्ध

२

सनावनस्थसूटिकस्यमेउपसनात्रहो कनमर्वयंती॥ तालप्रयागप्रतिवद्धगीतां सोनीतनूर्नानदहेनवीयं॥ १॥

ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय॥ ॥ तालप्रयागप्रतिवद्धगीतां सोनीतनूर्नानदहेनवीयं॥ ॥ नृहृष्टं गमवल
कनकमसिमय नानात्रागनाप्रकालिता २ वज्रुतदीपसंगममध्वमत्र
माधु श्रीवज्रसत्त्वगुत्रविजयिया॥ ॥ सुमत्रकीचनमसि कित
हसयत्रा लास्यत्ररूठवित्राजिता २ श्रीगुत्र लास्यत्रसदृशनाथत्रल
ममुलनिर्यागयामि॥ ॥ प्रथमात्र श्रीगुमधुलत्रविगावत्रलक
मलजितधत्रीया २ त्रैकात्रजागाडीध्वदीया॥ ॥ लंनप्रतगमश
यैकात्रजागा पूर्वविदहा १

विद्यामिनी विदिशिकी दीपुष्यं आध्यासमानाप्रिययाचसख्या॥ दिक्कं सनाकं नृहृष्टं विदहा नागप्रक्षनापदी जलीयं॥
वलि वंडकूत्रकूत्रव विविधित्रागना संपूर्ण याउपदीपनाउप दीप लाउप
छप बंडपदीपी॥ ॥ गजत्रागना पूरुषत्रागना नृध्वत्रागना स्त्रीत्रा
ना २ वज्रुत्रागना महितगना चक्रत्रागना बासर्वनिधनसंपूर्ण ॥ १ ॥
तागपदीजलि ताल ॥ ॥ नृनीलनलजलशोवतमाधु २ मत्रमधुल
वक्रताया २ वज्रपीजत्रसंज्ञासंपत्र प्रेतिहेतिहेतुवताया॥
दामात्रजत्रयिया॥ धूनाकत्रलनृलीग हह्ववक्रत्रयिया २ वज्रवात्र

नृहृष्टं गमवल १ दिव

नृनील २

हिन्नाल्लिगाससम्बन्धप्रयिया २ कुतिसवित्रीवित्रध्वप्रहिङ्गहिताहिताहि
 त्रुष्टमभने २ त्रुहतासर्वदववडायादधदिगीमत्रतिवैनसैरावे २
 प्रिपुवनपुक्तनुकुरायरागो २ प्रिपुवनपुक्तनुकुरीता २ प्रिनिधुन
 नवनाथध्वप्रसादिताहलिलगानुकाकाल २ त्रुहिनिशीसतागुत्रव
 त्रापुत्राग-कूदिगात्ररावन्नरावे २ ज्ञानामत्रसरायवधनभावयह्य
 भात्रगागनसैरावे ॥ २ ॥ **नगरेश्वरवितालड्डमना** ॥

कलध्वन २

कलध्वनविधिप्रश्नयहाना-पूजायामिदेववात्म २ विविधिउग्रहा
 तनृत्पगीवत-उमत्रेध्वनिमर्मगला २ उं वडा मृतायकर्मजा
 किनिममरावकुलावकत्रुधयनृप गलसुत्रहिशीत्रैवमिमहाकात्र
 उं सुप्रतिष्ठितावकस्त्राहा २ कनकत्रुधमसिताननत्रविताघापपुत्रप
 ध्ववडपल्लहिता २ पञ्चमृतायवतान-पञ्चाध्विपैववीहितिध्व
 दक २ लाज्ञान्नज्ञाद्वीकुधुलसहिता-वज्ञान्नवार्यमैग्रन्याध-जाकिनी

ॐ
रुनी
५६

लोभाखुगोहानूपिली विनेवित्रध्वनसैशना २ सतगुनवन कलठमवन
नैत्रिभगसखल्लयागुमहाशनमई २ प्रपुत्रखधुमीकानहाहास्कन
सैशना ॥ ३ ॥ **॥ प्रागवसकललित ॥ तालइमान ॥ कृष्णनिललीड**
नपिबहानस्वरावा केकानकनविजसमत्यन्ता २ निवासितामाकात्राहवमान
किसूनसैदतिनवशोवना २ ॥ नमामि **॥ श्रीवान्नसिन्नक्षिवजाम्बु** ॥
प्रकन्नमृतादकं २ **॥ श्रीलीटपदछायदृष्टिमानहनस्थितभकमखपिन**
विलासवठमललितेप्रदिष्टा ॥ १ ॥

२
कवर्ध
५७

यनत्रस्तवर्ध २ नृणादधवाधुध्रिगाधककनवानसनरूपदियिकत्र
पाठर्भकधपप्रधजगदाध ॥ वज्रवतदकप्रथमसर्व २ नृपत्रडध
उज्ज्वलकधन वज्रवेधखदीगकमधुल २ प्रिष्ठलमूत्रवज्रवाहगधरीति
तदनकमाकृत्र २ ॥ **॥ ३ ॥ हंहांकीहकारहनिगवर्धगुक्कन्नमृताकात्र**
रावरीति २ तवकनसमयक्रतामूर्जवान्धी पनमायवडीड तथध्ववि
ता ॥ ४ ॥ **॥ नागनाटक ॥ तालरुपा ॥ त्रकवतसप्रियतामससुन्दनि २ नृ**
दुर्गमस्कीधनिवदृष्टा स्वर्धप्रहाधमसितस्वर्धगम ॥ संग्रामरुमोविनयंशुतासी नाटायमूककिलवैडवगम ॥ १ ॥

गमकदहनं शोच १३

सुहादभुजलनगुकिनः॥ ॥ पुनरुदविवान्नसिमामकिदवि॥ ॥
जगत्प्रभादिनमयनसुनीता॥ क ॥ अगमवदपूनासवधानि २ श्रीगध
त्रसदीकागुत्रउपदः॥ क ॥ पञ्चवदस्वतूपसुपुके २ सहस्रश
गिनित्रेयाहनर्वगुहनव॥ क ॥ सगुत्रवतसिनिगातध्रिया २
हनयिवाकवजसुनासूनरपी॥ क ॥ ॥ नागगीधनरहेनवि॥ ताल
रप॥ गमकदहनपेवहानस्वरूप २ पञ्चमियानसुपेवसानिपूजिग॥

कपचिंगामसिंकला सगलयादशेवन॥ सुप्रतिष्ठानाटनागसमुदितः हसलो न सुलावन॥

॥ क ॥ पुनरुदववलिनायप्रिगुवनवीत्र॥ वीत्रभतायकसमयानन्द॥ क
॥ क ॥ वीत्रवित्रधनसहजानन्दः कनकमलावर्षुदयानन्द॥ क
॥ क ॥ पेववदपेवहानस्वरूपः देवासूननत्रप्रभादितादयया॥ क
॥ क ॥ ॐ अरुं की र्वस्वधनयानि दमनूयधधनिवीत्रमानद॥ क
॥ क ॥ ॥ ॥ नागसुप्रतिष्ठानाटक॥ पुनरुद॥ प्रिदलसुनाग्रहदि
नकम सुलनाशितप्रिगुवनजननि २ नागकनडलप्रिनियतमानव

प्रिदलसुनाग्रह

पुनरावर्तनी॥ क ॥ देविकनतिकपालधना २ रविननभिनमाला
 २ कमलक लिखि यितात्रवा यिनाच यिसहस्रसूत्रपिणी॥ क ॥ वकि
 भिनक ६ क धुलक ८० क ० क ८८ मरा २ हा ८० गोवककर्तियाडमयत्र व
 त ६ नूपुरलषणी॥ क ॥ एवपदयानलगाधनक दहिनिहानकना
 या २ एवाएवविवर्जितनूपुरगगलसंनूपिणी॥ क ॥ पदमवजपद
 भिल्लगतधनिया॥ गभवयिहासक लिखः नूपुरसिद्धिभाजप्रदायनी ७

ठपासामुक्तगीदयितनमाखी कृपादधानासवननमश्चा॥ अथान्यगंजर्णितवाकलीला वनांगलयंकद्वयीप्रदिष्टा॥ १

नमामिश्रीवज्रयागिनी॥ क ॥ १ ॥ **नागकड ॥ तालमा ० ॥** अथैवाचुनि
 देवित्रवदविघ्नत ६ सयनसूत्रासूत्रवंदितवत्रभा॥ तलगवतिपाइक मत्रमहि
 मधुतनडनरननकात्रा हा उमाहाउज्ज्वलरसवितरुषितनडनघ ६ डना
 ना २ गिनिप्रिनिप्रिनगुयनागना॥ ॥ भिन भिसिद्धनभनि ककुलनयन
 कस्तूरिकर्पूररुचिनीबूला॥ क ॥ कनतिकपालधनि मूठमालरुषिता २ कि
 खद्वीगिकपालधनि॥ क ॥ एनयिसूत्रावजवा कलिदा ६ **श्रीवज्रयागिनि**
 वनदप्रसाद॥ क ॥

रथैवाचुनि २

४५॥ मासु कशीमलयद्रुमाश्च मृदुस्वसस्ववसंगमसा ॥ गुणित्वनाश्रीदधनीदिरागं गन्धी कृतादक्षिणुं कनीयं ॥ १॥

नेमल प्रिल

मे ५

॥ ०॥ नमल प्रिल सनाह विनाशिता २ प्रि पुवन सवनाचल नुकनूपा ॥
॥ ॥ जाकिनीवन निधिवज्रवेनावनी ॥ श्रीदवी प्रिष्ठाकत्रि प्रि हवमाता ॥
नाहिमधुलमाय पुवनध्वनी २ प्रि नि रुदिनि प्रिनयना २ प्रि नितात्वप्रय
ऊन प्रि हवव्यापिता अखयनिर्नैज्जकागिनीया ॥ ॥ पुगुतिमगुतिवन
दहिममाता २ श्रीवज्रयागिनीपादधनत्मा ॥ २ ॥ **नागिनाटका**
ल ॥ लान्मैठलमाय कलिाईकात्रा अलिकालिइयिवापयिह

होमम ७ ल १०

नूवा ॥ क ॥ नमामि २ श्रीनिनाल मप्रि पुवननाथा ॥ वज्रवात्राहिना
लीगलनूद्वयी ॥ क ॥ कृष्णवर्तवगुर्मख प्रि निनावनविष्वा कलिष्ठात्र
र्ध्वपडाश्ट ॥ क ॥ जाकिनीनामाखं गुनाहानू पिनी वगुनदवीकीद
गिविलासा ॥ क ॥ रुषिताष्टमूडा कृतीमविनध्वन एतयिन्ननय
मवजहन् वदासा ॥ क ॥ १० ॥ **नागयमंजलि** ॥ **तात्त्व** ॥ मधुल
समयवक्रमधुलसम्पू २ द्वादश पुजवडवानवयन ॥ क ॥ ज्ञान

महोत्तमसभा ११

पुकन ॥ श्रीसम्बतकागिनी २ श्रीयावकुनादवित्रवतानूली ॥ क ॥
 उकिनीलामाखलुनाहानूदिनी २ वानिमानवडवापियात्र ॥ क ॥
 कायवाकविकृतिनीपुवने दानप्रतियाशुहत्रवतानूली ॥ क ॥
 यागयागिनीमेनीसमनसैरावेर नृष्टमममनशीहन्व ॥ क ॥
 ॥ ११ ॥ ~~नागरेनविनालरप~~ पर्वतधगातमनियाने समयाचार्यवि
 ध्वरुलनेरदशदिगादशवतनानूठ एतर्क दानप्रतिपि विघ्ननिनवा

पुवतधगात १२

नून ॥ ॥ ई ई विन विनध्वनवलिदानदहा दानप्रतिशुहत्रवता
 नून ॥ क ॥ पूर्ववेनीवन दक्षिणनल्लसैरवपश्चिमनू मिताहजिनवा
 पियात्र २ डफूत्रनूमाघसिद्धि मायनूकाय वानिमानवडवकथपिया
 त्र ॥ ॥ समाधि श्रीसम्बतमाय कालवकुहवज विध्वरुलनेर नाना
 वाधिसुत्वत्रा शार्वादमनियान ॥ सिंहनादवाजियान उमनूवाडने नृ
 ष्टयागिनीमनिसिफियान २ उमनूवाडने यात्र ष्टयागिनीमनिया

२ वानिमानवडवापियात्र २

म
५
३

२२ कालत्रिपुणकर्षणभवयीया वात्रिमात्रवडुन कथयियाप्र॥ क
॥ १२ ॥ त्रागहेत्रवि॥ ~~कालवा~~ ~~रुमान~~ ॥ नमई आकात्र धनवधन
२ साहु विसखडफात्र धन॥ क ॥ तनाई २ तनागीरु २ धवलस
संभवदहधन २ सनदस साहियकात्र धन॥ क ॥ दैदत्रालिंगसया
गहधन २ वज्रघी ० मडात्रयमनूति॥ क ॥ मायाविदहवितिलज
गु २ साहियवजसखपनमधन॥ क ॥ १३ ॥ त्रागमधमाथ॥

आतात्रनेत्राकनकारलोनीलतावसानचकितामगकी॥ मरुविधनाउमनाप्रकातमधुनीयंकथितामनीरु॥

~~काल~~ ~~रुमान~~ ॥ प्रिवकत्रत्र विठामिमधुलमाय स्थितित्रानन्द मन्त्रतिधन
वज्रवाना हित्रालिंगसम्वननानात्रमिमहाद्वला॥ क ॥ तनाई तना
रुतनातनागीरुईईई॥ नीलवर्धवपुर्वकुप्रतिमखप्रितप्र पनमानन्दमन्त्रतिध
ना २ विश्ववज्रमूर्ध्ववज्रटामकटधना हाउत्रा एनससुठमरिणा २ वज
घी ० गजवर्मउमन्त्रखद्योगधन वीनमानंदमन्त्रतिधन कनतिकपाल
पनमुपाधधनप्रिभूतवृक्षधितधन २ दिगीविगीकाकाठधमदमदा

३
५
२

दि दि

नमामि २

१५

ठियात्रि सहजानंदमूत्रति २ नमामिनमामि २ श्रीवक्र सर्वत्र सगुत्रवत्र स
त्रात्राधिता ॥ कृ ॥ १४ ॥ **नागादेवविगायलइमानानमामि २ जिन**
धगु/कर्तृकचगुत्रमूत्रतित्रालि गिता २ पंचहानपंचधगुस्वरूपावृद्ध
धर्मत्रालयध्वत्रा ॥ गिताई २ जगतसीसानडवनि यामनाहन ॥ नमामि २ पं
वनिन ध्वत्रा ॥ नमामि २ श्रीधर्मतित्रध्वत्र ऋदिसिद्धिवत्रदायनि २ इ
त्रिताहननसर्वपापजयैकतदानपूत्यनुद्गमाजप्रदा ॥ कृ ॥ नागा ॥

प्राकृष्टकसुमनाशी ऊयंतीपूष्यशमनीयं ॥ नंदनवनापकं ॥ सुनतमनानिवधस्तता ॥ १ ॥

नमामि २ धर्मधगुवागीध्वत्र धाउठाईवापनिर्म ठिता धाउठागीत्रध
नयूनकात्रा सर्वदवपनिर्म ठिता ॥ नमामि २ वागीध्वत्रमंउलयप्रगि
त्रि निवासिता ॥ सत्वविभाहिताईगीतिनाधनप्रसमामिजिनवक्रध्वत्रा ॥
॥ क ॥ गिताई ॥ १५ ॥ **नागानितदेवतालननूकसाध** ॥ वियैवि
धमयमनोहंगसयना हर्वगुसनावत्रउत्ततिया २ दाठिमकसुममं
काठाठातीतात्रनूपमडनवत्रउत्ततिया ॥ क ॥ वामकनाटकदहिन

विश्वविधमय १४

कनकजतगनसकट केशिया २ बुक्कलकूत्राहिनवित्राहिनवात्रि॥ श्रीवि
याधत्रिंशत्रयिया २ सूर्यमधुलमाय ३ उदयत्रनीति नीत्रसीहावस्थितिया २
कनकसीहावपिवयित्रनीति थनहनमयंतउन्मगिया २ अथित्रथित्रनहा
यित्रधन्त्र अरुध्वत्रालिनकालिया २ सहजानन्दमहासुखकलियिया
बृहडाकिनिद्वीनकालिया २ कनकसहात्रसृष्टिपुवनकलियिया २ हा
वैपुलावनहायिया २ आदिनत्रैतननिरूपमशाति प्रसमासिस्तत्रवत्र

नीलांजननीविहीयधवीनमहीनाकाठानूपवद्रवर्वनर्वकुंठो॥ उग्रुग्रहप्रयंकनालमखंकयाली
हनयिया॥ १० ॥ त्रागार्गीधनरैत्रवि॥ तालकति॥ उंआहीरुद्रनीस्वाहामं
प्रविष्ठापडवान्न २ पूजापूजितापूजसैरावितल्लवत्रपरुवेगुन॥ क॥
खखखाहिलिवलिपूजानघघघाटयघाटयविघ्नत्रपैवामियानसर्वव
सालिनपैवदानसर्ववलिना २ सर्वद्रुद्रताकसहताप्रा पिभस्वलेत्रप
सालने २ ठाकठाकिनीइयित्रहुठामठान ०० दैवलिगृहगृह
पुन २ समयानत्रपुदानपतिन सर्वसुखसंप्रदधनीतिन २ जथेवजथेव
धारेनवसकलमातृकाजागनाथः॥ १ ॥

५०
श्री
गुरु
देव
॥

प्रियाधनसादुनसारिहृदयसुखं दसीमानिरूपयवाप॥ पञ्चकमभिविहितापवत्सुसुखनिजान्तिहमवधमः

उदिताल १०

उरुथजिवधनेजीर्घ ० मातृकारवेपुत्र २ दानयतिस्वकार्यसिद्धि
मनीत्रधसर्वस्वप्रदभीति २ आनसैसात्रतथागतवयनसाहाय
कनरवेपुत्र॥ कृ ॥ १० ॥ नागविलास॥ तालमाथा॥ उदितालत्र
यपवनधगा २ वनसादामसीकाभरीता॥ कृ ॥ धानइष्टलयनिभभव
निता २ अषयनिर्गतभीरुगाता॥ कृ ॥ दिनकनसधुलमधगा
ता २ सहजामृतनसुखकृता॥ कृ ॥ दग्धनत्रिरयप्रतिनिहीता

अ॥
अ॥
अ॥
अ॥
अ॥

२ देवाहनननभनसमिता॥ कृ ॥ गभर्वतिपवनयनिगुत्रलगता २
वज्रावाताहिगुण्यायभनसमिता॥ कृ ॥ १४ ॥ नागविलासताल
माथा॥ कूं कूं कूं कूं कूं कूं देहधनसैसात्रतान् २ ईदत्रालिंगलकागधन
२ हवजागुफागनाई २ हवजागुफागनाई कूं कूं कूं कूं कूं कूं २ सुननन
वीदितवनसवन २ कसुमविलपनदेहधन २ लावविमाकूटविमहसा २
गुफगुफआकाठियात्र २ नमामि २ श्रीहवजा २ गुफगुफआपिधिया

गो॥ क॥ १८ ॥ राग गवैजगिनि॥ **गाल नरामा** ॥ हाउ न्नाहत्तु कि
 यानि तसैव न धनयिकीवा लित्र र सा २ प्रियतायनमधियाभ भन २ म
 कूटके भदिगं वना॥ क॥ ॥ तने भा नू नू व संवन रेया २ सहज सैद निभा नू को
 ला २ हम बिना जि न व डवा नाही २ हृदय महिया यि त सा ना २ भलि लायन
 वन सहमयन कर्षत रुन यि ता वा ला २ गग स नि त व नि त वी धि त शाय २ म न
 मी उल्लू ~~संवन~~ व डवा नाही २ उक्त विनू द धि त्री धना २ गवै गिली ला व डया
 एवली ना २ प्रिय धनू ख डी ला ॥ का दि ला ना सै व न ॥ पयि श यि नू न्य एव ता ना २ हम बि ना **कि न १**

यिया वल्ल सा गुनू वन ॥ **सा ना ध** २ समय आनी द रु लि ला त मी उल्ल म
 व न व डवा नाही॥ २० ॥ राग भाद गिनि॥ **गाल नू काल** ॥ व कि की
 उल्ल की ठी गोच क म पल रु धि त गी व नू उ न त शि त मा ला २ स न व कि
 व कि त्रे या रु स्म वि रु धि त गग स गि नि व ड नि वा ना॥ क॥ ॥ नै व श शि
 ह नू व द भा नू को ता श ला ना ध श्री स म्ब न ना या २ व ड क ना रु क हा ॥ थ
 ध त्रि या क ॥ ० दि न डू ख डी ला २ संपू ट श गि नि क म ल वि हा सि ला त

महासुखमनिप्रसादा २ वज्रवाहिनालीगधर्मेव ननावयिवरुबीहरेला
वाङ्मनिकालमिकीर्तिहनुव नृद्धिपुव रुलनप्रसाद २ प्रहान्नालीग
हनुवनीलवर्षविलाशयिभून्पकनृध ॥ २१ ॥ तागहेनवितालद
रमान ॥ गङ्गाजिनउर्द्धहाथधनिया कमलकुलीशर्जगवाता २ उमनृकन
तिकुभनप्रिभूल वामखर्दीगकपालन ॥ २२ ॥ श्रीसम्बतार्यवाङ्मलिपु
म्भर्जवनानृने २ मानयिनवायियातिप्रमाया २ सहबधुहनुवतालीना ॥ २३ ॥

गङ्गादिना २२

भवन्मस्तु द्वा दश ह्यथ धृतिपाडनत्रिभिर्माला २ विष्णु कलि ठा नृर्ध्वं वीर
 दाहट वाघवत्रममटमूडा ॥ कु ॥ अलीरुप्रपाहत्रमवापयितृध्वत्रकाली
 त्रापीदिनमूडा २ नीलहन्निगलाहितकनकामय चउमखत्रुतिविकत्रानूत्र
 ॥ कु ॥ नृतिठावीत्रवित्रध्वत्रनायकठिनिचक्रमहीवीर्नवीना २ कनूतस
 तागवीत्रवीत्रध्वत्र भुंउयूसयत्रसैसानूत्र ॥ कु ॥ २२ ॥ तागलेनव
 ताल ॥ इयैउयैवानृतिस्सयत्रसूराकनी २ नृखयइः खसैहानधी ॥ कु ॥

५
रुद्रावाहनि २३

विष्णु २६

लूनयूनयानिहादहापूतर्क नावधिमाननित्रवाल्लहः-जिनपदयानलेदह
पूतर्कः-जिननननिवडयागिनी ॥ अर्यैअर्यैहाउत्राहृतसुखभला-कनतिक
पालकनधनसी २ अर्यैअर्यैतूडमममनस्थितिगिनिवदूदननभितनमा
ला २ अर्यैअर्यैलाखडगगतसैसात्रप्रथमामिन्नद्वयैवावुति ॥ क ॥ २३ ॥
नागशल्लवर्ध ॥ नालर्गमाथ ॥ दिहुडादिमूखगिनिनयना २ मूकटकेभ
दिगीवना ॥ क ॥ तनात्ता ३ ॥ वामकनोटकदहितकनति २ हाउभाह

विष्णु २७

तलविहृषिता ॥ क ॥ सूर्यमधुलमाय-ताधुवमूत्रतिननभितनमाल
सुखभरिता ॥ क ॥ सागूत्रवतलभिलगाध त्रिया २ बडावाना हि
मिल्लिगना ॥ क ॥ २४ ॥ नागमालवा नालमा ॥ वडिंधालि
धतालिर्वणालिनि सिंधिनिव्याप्रिसिर्गवकउत्ताकिनी ॥ क ॥ नमामिथी
यागाम्बनहानधनी २ पिनिनप्रदवीतिपुवनप्रविळा ॥ पूर्वडफूत्रयधिमद
जिलदिगादवी २ जकिनीदीपिनिवडसिकसाजिनि ॥ वगुनदिगहुकहल

गोशालासन

अथ गोशालासन

गोशालासन

ASHA

2845

पुस्तकानि हि हिमालयानामादिभिः कुमोद्यानां नृणां शीकरादि
विविधैः कृतं सन् मार्कंडेयविष्णुवराहधर्मकैद्याप्यभविष्योत्तरं श्री
श्रीमहाभारतं हि हिमालयानामादिभिः कुमोद्यानां नृणां शीकरादि
विविधैः कृतं सन् मार्कंडेयविष्णुवराहधर्मकैद्याप्यभविष्योत्तरं श्री
श्रीमहाभारतं हि हिमालयानामादिभिः कुमोद्यानां नृणां शीकरादि
विविधैः कृतं सन् मार्कंडेयविष्णुवराहधर्मकैद्याप्यभविष्योत्तरं श्री

नेपुदवीप्रितिनपदवीनाचपुदवी॥ हनिह नवु क ठून्नु नूनमास २ धाउ
 धयागिनीमित्रसंराव॥ क ॥ २५ ॥ नमामालव॥ तालमाथ॥ प्रकवदन
 नलमकटत्रालीकता नपु पुंजखपु पूरुके अनधनधानी॥ क ॥ नमा
 मिथीमंशुप्रापन्नतयधना॥ सयत्रनासाधनिप्र निगधनी॥ क ॥
 दहिनध्याग सपति वातधीमहाकालसग समुलमाय प्रकलितस्थि
 ता॥ क ॥ २६ ॥ धिर्महाननायाविध्वविद्यापिता २ नृहरयवकृया

धिरनिहत्रध॥ क ॥ वज्रधनप्रसादित्रदा सहनयिया गुनवन समो
 लिसिद्धिवत्रदा॥ क ॥ २७ ॥ नागमालव॥ तालमाथ॥ पूर्वदि
 गस्थितहंसासनीदेवी वंडवदनीदेवी धानिगिठला॥ नमामिथीरु
 तवमा प्रिकाग सपतिकुमात्रा॥ नृहरैत्रवन्नृश्या गिनित्रालीगत्मा॥
 ताकावदनिल्लभलितमयूत्रा सतिदेवी विद्याप्रधानिवेष्टुवीदेवी॥ क
 वदनधाननूपीवानाहीनूपी कंकुमवदनि इन्द्रायनीदेवी॥ क ॥

कनकप्रधानिर्गर्ककान्तमृतिः प्रथमासिद्धी श्रीमहावक्त्रीसमाप्ता ॥ क ॥
 ॥ २० ॥ त्रिगुणसिद्धिलिङ्गा ॥ त्रिगुणसिद्धिमान् ॥ ॥ अष्टदलसत्राङ्गद्वय
 प्रकाशित २ श्रीभक्तमूर्तिवन्दनलोचना ॥ क ॥ दहिनवज्जया
 सिवामकमलपाशिनमासिद्धीधर्मत्रायमहामूर्ति ॥ दहिनत्रिजिनिवन्
 वामर्कशिकापाण्डुविशिष्टवीवनधनीत्रयप्रदा ॥ क ॥ कान्तप्रथमा
 त्रसन्निर्मलसदृशदयाः कान्तउद्धान्तः विरुचप्रदा ॥ क ॥ कनक २ सुगत
 वन्दनकमलः पुष्पसुमनसः श्रीकृष्णप्रदा ॥ क ॥ ॥ ६५ ॥

त्रिगुणसिद्धिलिङ्गा ॥ त्रिगुणसिद्धिमान् ॥ ॥ उद्दिष्टपुष्पकमलान्नकिन्तल्लिङ्गादवन्तसु
 ला २ निर्मलरुदयकनकमयनाथः दहिनत्रयवन्तप्रदा ॥ क ॥ पुष्पद
 वशलाशङ्कान्त २ त्रिगुणव्यापितकान्तउद्धान्तियाः प्रथमासिद्धिम
 लार्कध्वज ॥ कनकनतनमसिहन्त २ विरुचिर्गर्ककनकपुष्पवन्तध्वज
 २ वामकमलध्वजवन्तदन्तारन्तः सहजानन्दमूर्ति २ सन्तनयक
 किन्तनगणपूज्यान्तः ललाटवन्तः सिन्धुगन्तध्वजिया २ तिसिन्धु

त्रावल भाऊप्रदाता २ दर्शनप्रापइ ४ खहनल २ नकावहीमखनरस
 लावनासर्वलकलसीपुर्ल २ नलषविगकृगधनि लाकठधन २ मर्ष
 मधुलपुवविजया ॥ क ॥ २९ ॥ नागकड ॥ गालमा ० ॥ पवनकालन
 नीनधनसिमधुल ॥ इयनिकनकावलमध्वर्वकी ॥ क ॥ नोमिध
 वकसम्बनगावपदकमल श्रीवडवानाहिनालीगा ॥ क ॥ विद
 वदनदहननयन २ घननसपुनिगसंवतदवत ॥ क ॥ वि

२ शालिकाली शालीरुवन ही वापयिचउवनत वडुमोनमर्दनी ॥

वहिरुनसाईनिध्वषी मंथितामघनकं उलकनर ॥ क ॥ जनकय
 दीपदुर्धयवधम २ नातकाटिघध ॥ अयद्वयकनति ॥ क ॥ वाडिग
 उमनूधनिगावकीगीरु ॥ ननपाठगिठल ॥ क ॥ सनूधिन
 मंदमझासवहद २ पीयूषपुनिगकनाटक ॥ क ॥ कनतिस
 प्राप्तासनधिनधनिग २ सचहाननठिनमालतर्लविग ॥ क ॥ सगगुन
 वनधमसु कधन २ नति सुधाहर्षसम्बनगी ॥ क ॥ ३० ॥

त्रागककन॥ तालमधुकीकाल॥ त्रवनिनिहितवामजानलिसव्यावज्जकित्रल्ल
 सनसन्नासात्रागद्विषमाहर्वधित्रयाधमप्रिपुवनत्रायात्रवल्वीत्रा॥ नमामि
 श्रीर्वउमहात्रासप्तज्ञातमपूनिक्कुदिता २ विध्वनाधविध्वव्यापितावीत्र
 विक्रममहाकीधत्राया॥ ज्ञातमपूनिक्कुदिता २ त्रतिहीमल्लउग्रपुर्व
 उर्दधुकत्रायाविश्रुतकित्रल्ल २ यीतिगत्रधनाकेकलनयनावेनिर्मु
 णासात्रास्रुधनल्ल॥ माधवमायापूनीदतवृक्षानूडपिधवापादरुतना

विनादयंतीवियमवल्लोनीसुकंकल्लचामलचालनन॥ कर्षीदधनासुनवृजपुष्पवनीगल्लयंकथितावनानी॥

॥ समत्रसमायात्रागविभाहस्रनत्रागसीमादितादहा॥ तल्लारुतल्लप्रकल्लिता
 मोलिक्कसूत्रनापूत्रनूननकात्रासूत्रनननागमर्वदितावत्रल्लत्रायसूत्रध्व
 त्रत्रवल्वीत्रा॥ कृ ॥ ३१ ॥ त्रागवत्रात्रि॥ तालमा० ॥ वामखयतध
 त्रिदहिनकत्रति २ पायत्रनूपूत्रमूउमाल्लस्रिणा॥ कृ ॥ नावयिचकड
 तिबडयागिनी॥ त्रिनिनप्रदविप्रिपुवनप्रविच्छा॥ कृ ॥ स्थलल्लक्ष्मि
 नादविनिर्नरुतदेवी २ गून्यपागुदेविगून्यनिर्नरुतना॥ कृ ॥ काल्ल

सुधुपरासुन लयभाव नीलनिशानवप्रभावहंति॥ कौतपदापाधनिवशितपिमानान्नगानामरुजीप्रदिष्टा॥ १ ॥

मृग्युदयिषाभलवर्धिया २ त्रागद्विषमाह कत्रागिनकुदिा कृ ॥ ४८ ॥ श्रीसह
त्रक्षीतात्रक्षीद्वीभाऊमार्गद्वीतुक्कययिष्ठत्रक्षी ॥ कृ ॥ ३२ ॥ त्राग
त्रामकनि ॥ तालमा० ॥ कमलविकाशितस्थितिदृशसुत-कमू दप्रियवर्ध
समदहा २ वपुत्रवदनकुवलयदलासुत-नेत्रप्रकाशिता ॥ ^{हान} ॥ नमामि
श्री श्रीमहामेशश्रीसकलगुहत्रायसुतगुत्र २ कमतिदहनप्रकाशिता
सर्वहृहाननिधिवत्रगाता ॥ कृ ॥ प्रथमकनकयध्मत्रितावजघी०

कमलविकीर्ण ३३

मृदामालिङ्गनत्राजिता॥ ३३ ॥ द्वितीयां कृष्णधरातीयहानस्कंधचतुर्थ
खड्गसंवाहनधरा॥ ३४ ॥ उत्तरयुग्याभ्युवनधर्मवापचतुर्थवामध
तापूष्का २ तानमकुटशिरप्रक्षालिताकिलिषनाभानरुचिवता॥ ३५ ॥
निर्वृद्धिवृद्धिहायिनिमिक्तनिता-सर्वरूहानतिधिवनप्रदा-प्रह्वनस
त्रक्षमागात-पत्रमाश्रयजडात्मनि॥ ३६ ॥ त्रागधनाशीतालद्वर्ज
मान॥ गजमुखयिनयनतांगुवमूर्ति-नृत्त्याधियतिगालक्षधरा २ हनम

सिमकूटत्रला एतद्वतात्रसिकित्तससैकाऽभा ॥ क ॥ मानियाविघ्नमानिया
 दर्पमानिया ~~वि~~ विद्वानक्ष २ मानियामायामात्रसन्तासा भद्रपमइख
 नाहिता ॥ क ॥ यत्रशुवानीकभवडाहस्कारिष्टिपानदहिनकात्रा २ मस
 लधनखदीगाधनिबकपालरुलककूवाभे ॥ क ॥ विधिप्रवसुवूट
 गिरसाद्रपशटमसिमष्टिगा २ लम्बकत्रक्षलम्बादत्रसीरापायत्ररिमि
 रिमिवाडने ॥ क ॥ त्रलातत्रध्यात्रलागत्रितामूखीकसखत्रुति

सन्दता २ दीनादत्वात्त्वमसखदाता नमो ॥ सुनमासुगत्सवत्रा ॥ क ॥
 ॥ ३४ ॥ त्रागनामकत्रि ॥ तात्तमा ० ॥ ह्रिदध्वसूताननत्राजीवलोचन ३
 र्गतिगात्रक्षकैरासन ॥ क ॥ नमामिष्ठीमदवलाकिर्तेध्वत्रागायालि
 ताप्रित्वध्वत्रा ॥ क ॥ गर्भगायकासात्रवामपासितालवत्रददहिनधय
 ऽभरना ॥ क ॥ मकूटविद्यातिगाँतधगात्र नमनासूतनत्रात्रक्षगाता
 ॥ क ॥ वपुत्रज्ञानतवपुत्रपैवध्वत्रा गिनयनवर्दितापदपैकई ॥ क ॥

सागुत्रचतस्रमस्तु कधत्रस. एक्षितिसुधार्घ्य एव हूतौ॥ क ॥ ३५॥ **ताग**
 कोलपि॥ तालत्रनमाथ॥ कालयित्रधियाधानामूनित्रकैकोत्राघनकापिधिया
 द्वात्रा २ कत्रलकीयालीधत्रा॥ क ॥ मलयत्रकूइत्रवात्रधिया २ ठि
 ठिमाहिनवात्रधिया तहिवाल्ववात्रहिमध्वमयनालवधयायीया २ ह
 लिकालिजलसालिजलइइत्रवात्रधियायीया २ वउसमकस्तुत्रीणीत्राक
 पूत्रत्रावनयाधिया २ मालिया ०० नूनसालिजल २ तहिवाल्ववात्रधिया

धिया २ प्रसलजंताकत्रकथुद्धाथुद्धनमूनियायीया २ नीलसुहर्तूगसदा
 वयीया तहिजसत्रावधप्रधमामिया॥ ३६ ॥ **तागगन्धत्रहेत्रवि॥ ताल**
रय॥ प्रिनिश्रयनवतुर्वक्तविहात्रा २ कलद्रवधित्थनसंगलहीमा॥ क॥
 हामकत्रेयाउहामनहिवउमात्रा २ तागध्वषभाहर्वधित्त्रादिया॥ क॥
 वामदहिनकत्रसूत्रवयिपात्रा २ जालिगवजानलत्राद्रुतिकत्रिया॥ क॥
 प्रसुधलउपायित्रवजि २ त्रविषाणिमधुलत्रावार्यवयिधया॥ क॥

कर्षुवा लकैत्रत्यकनहाम २ वायुसंवधित्तवियाठरीगध॥ क्र॥ ३॥
 त्रागरेनवि॥ ~~तान्~~ ~~प~~॥ वल्लुगुग्मभननीतसप्तका-वासकीनागभगर्जिताम
 घा २ गकनभभनत्रल्लभकवकाधूर्तिगभघातकननाम॥ क्र॥ ०००
 लुगमश्लश्लल्लगवनिवायूनाकसदिगीविदिगीवल्लिगुर्लुगुर्लुगु २ न्नल्ल
 मभननुतीसवीत्रध्वननावयिसहजानेदत॥ कंकलिधानावर्तिगभघा
 दालीकुलाककैटिकनाग २ कल्लैकल्लैतवा-नीवपालनागप्रवधुमधा
 वल्लुमघासत्रसिजनागवूतकवृक्षा २ न्नल्लल्लल्लल्ल

व. अ. ग. र. म. ण. त. ३६

शकुमात्रा शगदीध्वनशगतगुत्तुवनव्यापिता॥ क ॥ प्रसक्तधनशुभ
 यत्रमगुत्तनाया २ श्रीधर्मधनुस्थानतपाल विहृषिता॥ क ॥ शगता
 थशगतनिर्नशनताया २ सर्वशक्तविश्वत्रदयधितनिर्नशना॥ क
 ॥ ३२ ॥ रागहेतवि॥ तालप॥ नृधनशुभपालदिगीविदिगीपुवनध्वंसि
 त्रमात्रवपुत्रघन २ गगल्लोषत्रगगल्लनपूनकात्रागगल्लमात्रध्वं
 वाडियात्र॥ क ॥ शूनमासिपवत्रा २ जाकिनीपवशक्ति हानश

किनीशक्तशुभशुभागा॥ ॥ पूर्वउत्तरपश्चिमदक्षिणवपुर्गुवनवि
 घनमात्रविघनखलियात्रा॥ ॥ वज्रशकिनीधात्रवतालशकिनीचंश
 लशकिनीवपुर्देवी॥ क ॥ सिंधिनीव्याघ्रिनीशुभकडत्राकिनीखड्ग
 गायत्रशुभकहस्तशकिनीदीप्तिनीवडसिकावाडिनीधात्रलम्बादत
 काशवदनी॥ क ॥ शिनशननीदेवीशकिनीपुश्यपिशत्रलपवम
 दाहत्रलसिंधीया॥ खपुर्लकवज्रघं० खदीगायाश २ पुसमासि

दवीशानिष्ठवती॥ क ॥ ४० ॥ त्रिगर्भमात्रमात्र॥ त्रिगर्भमात्र॥ ॥
 याममस्वर्गायपयंककृष्णतर्ह २ हानिष्ठवतिनोमिरवदीवतर्ह॥ क ॥
 नाथर्हनाथर्हर्हनाथस्वर्हनाथर्हर्ह २ दहिभनाथत्रयययर्ह॥ क ॥
 वक्रउकिन्यादिगणयत्रिवतर्ह २ संगसिगमात्रगणरवतर्ह॥ क ॥
 धर्मार्थमनात्रथकवलरतर्ह २ इयात्रसंसात्रश्रुतनिधितर्ह॥ क ॥
 साकात्रनिताकात्रविष्ठनिर्तजन २ पृथ्वीगर्भर्हजलमग्निप्रर्हर्ह॥ क ॥

वामानलनलवर्षमाधवकृहो २ पूजिगीगववतर्हसगमग्रस्थविनेश॥
 क ॥ सागुनूचतर्हभिन्नागासुधर्नद २ एनगिष्ठीयागर्भवतर्हवर्ह
 नी॥ क ॥ ४१ ॥ त्रिगर्भमात्ररहेनवि॥ त्रिगर्भमात्र॥ पूर्वदिग्ग
 लचक्षुगममठभनदविवृक्तयनिर्हसासति २ र्हेत्रवमहाकालगण
 पतिकुमानावीनत्रयपालयकयकृष्णी २ पूजियात्रममन्त्रलिवलित
 धितात्रोसथिर्हगिनिमात्रगण २ त्रिदिवनशीत्रष्टममठभनद

कुकु ५७९

पुनः
५७९
५७९

तथापि भवगता ॥ कु ॥ उत्तरदिगं वलगा कनकमभनदर्वी नृपा
यधी वषवाहनी ॥ कु ॥ पश्चिमदिगं शुक्ल-कालीकुलमभनद
विष्णु इयसिगाजवाहनि ॥ कु ॥ दक्षिणदिगं शुक्लकर्कशमभनद
विवाताहीमहीमासनि ॥ कु ॥ उत्तरकोत्तधाता नृकमभनदवि
कोमात्रीमयूतासनि ॥ कु ॥ नेत्रकोत्तलक्ष्मीवर्धमभनदवि
वेष्टवीगन्तुगसनि ॥ कु ॥ वायुव्यकोत्तलक्ष्मीवर्धमभनद

विचामुप्रतासनि ॥ कु ॥ ॐ भनकानि नृदादहासमभनदवि
महालक्ष्मीर्हिहासनि ॥ कु ॥ ४२ ॥ त्रामकश ॥ ताल ॥ ॥
धर्मत्राजमसनयमत्राजवाहन-मानसीगासनविघ्ननिवातल ॥ यमीगकवीत्र
दक्षकोधहीत्ररथादधिगीत्रमधुलकील ॥ ॥ त्रगप्रधवर्धकधुलक
लीमपिनयनममूडाहनल ॥ ॥ कुलीभमूत्रतर्जनीपाठा-धन
वपुःकननृदादहास ॥ ॥ प्रहीगकप्रहतीवीत्रसीवरा-गधवीत्रासे

धर्मनाड ४३

न्यवीत्रध्वनसहिाप्रभीगकवीत्रविघ्नीगकवीत्रपेलाक्कविजयबाला
 नलसूर्य॥ ॥ हनूकवदप्रनमाध्व वडाउहीधवर्किं शुंरताशवी
 त॥ ॥ नृष्टएयहतर्षनृष्टे स्वयंरतर्षं सतातीं अने र्षं॥ ॥
 सतागुनूवनलमसुकधतर्षं रसतिनृमृतावयमीगकवीतीं॥ ॥
 ॥ ४३ ॥ **नागसधुमाथाताल** ॥ नमामि २ योगमन्त्र ० ध्वनहान
 उकिनी नृलींगिगा २ इतिगहनधनृतिधवलपुंदहा हानठाकिनी यन

मध्वती॥ ॥ ननाईई २ ननागीई ३ ॥ दहितकनअनबामधनूर्ध्वत क
 वरुगवृक्तकपालधरा २ वडाघी० गिनिलावनसूदतीप्रहसिताकीधर्ष
 मत्रवीता॥ ॥ विविधमात्रविघ्नविना अननृद्धि सिद्धिवनप्रदायिनी २
 हरीपुरवंगुनिवेधनादनभावयऊगातात्रयीगुं॥ प्रसववदप्रनमागुनूर
 गति शवीपुरवंगुगिपूल्हापुदं २ अत्रम २ कतापाप्रऊयंकन नृादिवृद्धयन
 मेध्वती॥ क ॥ ४४ ॥ **नागलेनविा नुकतात्वा** ॥ कलिगवजानल

नमामि २ योगमन्त्र ४४

कविगवजानले ५५

श्रीवक्रसर्वत्रहृकात्राहवजिफायवप्रमार्त्त॥ मीसाद्रुतिमयमीससैयूताप
॥ सात्रिमयमीसहृङ्गु॥ ॥ खखरवाहित २ रेगमकदहनयवाभियात्र
सत्रलिवलिना २ श्रीवक्रयागिनीजकिनीलामारवठलोहात्रूपिषीयश्चया
गिनी २ कृतीसर्वीत्रवीत्रध्वत्रमधुलकत्रभकिलिकिलायमान २ उमा
त्रर्घ्वभध्वनीप्रभादिगवाक्रियात्रदानपतिविघ्नविनाशिता २ यागिनीय
॥ देवीसैवमयगत्यत्राहर्वपुष्पुष्टिर्भूतिपूष्टिया २ मानविनाशनत्र

प्रभादिग ५५

ऊनऊसयत्रात्रलिमासखरुलभाऊहवीपु २ सर्वसिद्धिवाक्ययद्वात्राग
नाकनाद्रुतित्राचार्यभक्तचित्सायत्रमाद्रुतिरुलयासिसयत्रात्रनूत्तमा
हानसत्त्वभाऊप्रदाता॥ कृ ॥ ४५ ॥ **नागसधूमाधनालमाथ॥**
प्रभादिगत्रादिदणहमिसूदत्रीहनभत्रमधुलसनस्थितत्रयना २ द्वादश
पुञ्जवउवदनसूत्राहवजवानाहित्रालिंगम्॥ कृ ॥ **हैहैहैहैहै**
दणदिगपुवनमानसयत्रसैवाधियात्र २ द्वादशत्रालिंगमत्रदयसैराव

नाव पिदाने सैव तताया २ कलिषघघृग रुचर्मविहृषित कनतिउमनू
 गिष्मलधरा २ मार्जपूतसतकपाल खदीगायाभयनशुब्रक शिखधना
 २ पंचजिनवनमकुटजालैके तमटमूडात्रा रतलद शिता आलीकाली
 ३०० आलीरुचापयि व्याघ्रवर्मनिवधनरुपुतान् २ नन शिखमाल आने
 रणीसम्बतदिव्यवशुगिनिकन लहिया २ इतम २ भातू तुशुपयि भन
 लगभर्वतिप्रनमाधवदगीता ॥ ४९ ॥ **नागललिता गालरया ॥ व**

वरेववसैधना ५१

एवव संधनापीतावर्तभकमुखविचिग्राहृतलहसलीया २ कनकरैधरे
 वामकनधारी दहिनत्रलयमूडाधवाविना २ उंवडी एवकैन्नानसा
 गलत्रष्ट उंवजदरुतिष्ठमदिती २ भदनीवडी एववजवधरै विध्वर
 तलसयनः निसानएवकु २ नहहिमागति रुदमर्घपूजाग्रहगवका
 सलपूडिगा २ मीगुलकर्मससाधय २ अभधय २ डीरैन्नखाहा २ नोमि
 श्रीधनइहिगापादानविंदविविधिउपहानपूजयामि २ श्रीभक्तमिहम

लिमानवलरंजना-देविशीवसंधनामंठल्लित्वा मि २ सगुगुत्रवत्र
कमलभिलेगाधत्रिया २ गाय निआवार्य संधसयना २ ह मि ८४
धनविधितास्यरुद्धः सर्वसुखहिया संमानात्रर्षी ॥ कु ॥ ४१ ॥ त्रा
गहंयना ॥ तालमा ० ॥ ३ आर्द्र स्वरावमनूतिनीलश्रीमूतसैका ४ ॥ २ खर्वली
वाद्यत्रिनिनयतावानिवदनरुयंकता ॥ कु ॥ ४२ ॥ वशीमहाकालकैकानम
त्रुति ॥ अक्षिसिद्धिवत्रयागा २ कनगिखर्यत्रय पुत्रिष्ठलमानदय सैहानि

ता ॥ कु ॥ निपूहदयपनिप्रयालीठावाधुवर्ममूषुमाला २ मोलित्र
ज्ञात्यशिनवत्रा ॥ ४३ ॥ सनपालितामहावीत्रा ॥ कु ॥ ४४ ॥ कलाललल्लि
कापूरकटिउर्ध्वकै ४४ ॥ उर्ध्वगत्राएनसह पितादहालीषास्याधितर्य
कता ॥ कु ॥ ४५ ॥ श्रीदेवमहाकालगिधुवनव्यापितादेवाहृतनत्रसविता
सगुगुत्रवत्रनशीनागा ॥ ४६ ॥ शनवत्रसकमलवीदिता ॥ कु ॥ ४७ ॥